

६. गिरिधर नागर

—संत मीराबाई

(१)

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई
जाके सिर मोर मुकट, मेरो पति सोई
छाँड़ि दर्ई कुल की कानि, कहा करिहै कोई ?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई ।
अँसुवन जल सीँचि-सीँचि प्रेम बेलि बोई ।
अब तो बेल फैल गई आणँद फल होई ॥
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई ।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई ॥
भगत देखि राजी हुई जगत देखि रोई ।
दासी 'मीरा' लाल गिरिधर तारो अब मोही ॥

(२)

हरि बिन कूण गती मेरी ॥
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी ॥
आदि-अंत निज नाँव तेरो हीमायें फेरी ।
बेर-बेर पुकार कहूँ प्रभु आरति है तेरी ॥
यौ संसार बिकार सागर बीच में घेरी ।
नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो बूड़त है बेरी ॥
बिरहणि पिवकी बाट जौवै राखल्यो नेरी ।
दासी मीरा राम रटत है मैं सरण हूँ तेरी ॥

(३)

फागुन के दिन चार होरी खेल मना रे ।
बिन करताल पखावज बाजै, अणहद की झनकार रे ।
बिन सुर राग छतीसूँ गावै, रोम-रोम रणकार रे ॥
सील संतोख की केसर घोली, प्रेम-प्रीत पिचकार रे ।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत रंग अपार रे ॥
घट के पट सब खोल दिए हैं, लोकलाज सब डार रे ।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर, चरण कँवल बलिहार रे ॥

परिचय

जन्म : १५१६, जोधपुर (राजस्थान)

मृत्यु : १५४६, द्वारिका (गुजरात)

परिचय : संत मीराबाई बचपन से ही कृष्णभक्ति में लीन रहा करती थीं । बाद में गृहत्याग करके आप घूम-घूमकर मंदिरों में अपने भजन सुनाया करती थीं । मीराबाई के भजन और उपासना माधुर्यभाव से ओत-प्रोत हैं । आपके पदों में प्रेम की तल्लीनता समान रूप से पाई जाती है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'नरसी जी का मायरा,' 'गीत गोविंद', 'राग गोविंद,' 'राग सोरठ के पद' आदि ।

पद्य संबंधी

मीराबाई के सभी पद उनके आराध्य के प्रति ही समर्पित हैं । आपके पदों का मुख्य स्वर भगवत प्रेम ही है । प्रस्तुत पदों में आपकी उत्सुकता, मिलन, आशा, प्रतीक्षा के भाव सभी अनुपम हैं ।

शब्द संसार

कुल पुं.सं.(सं.) = वंश, घराना

ढिग क्रि.वि.(हिं.) = पास, निकट

मथनियाँ स्त्री.सं.(हिं.) = मथनी, दही मथने का साधन

रावरी सर्व.(दे.) = आपकी

चेरी स्त्री.सं.(हिं.) = चेली, दासी

नेरी स्त्री.वि.(दे.) = पास, निकट

छतीसूँ वि.(दे.) = श्रेष्ठ

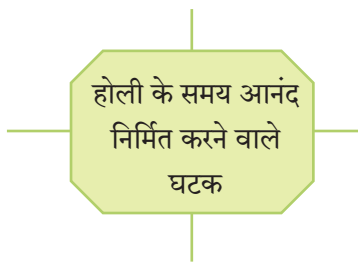
कँवल पुं.सं.(दे.) = कमल

बलिहारना क्रि.(दे.) = निछावर करना

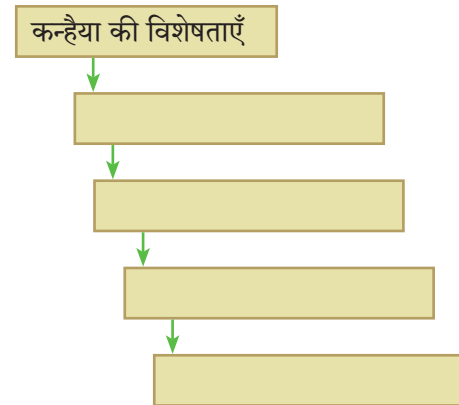
स्वाध्याय

* सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :



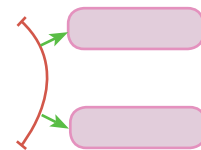
(२) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :



(३) इस अर्थ में आए शब्द लिखिए :

	अर्थ	शब्द
(१)	दासी	-----
(२)	साजन	-----
(३)	बार-बार	-----
(४)	आकाश	-----

(४) कन्हैया के नाम



(५) दूसरे पद का सरल अर्थ लिखिए ।



उपयोजित लेखन

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए
तथा उचित शीर्षक दीजिए :

अलमारी, गिलहरी, चावल के पापड़, छोटा बच्चा

अपठित पद्यांश

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

काम जरा लेकर देखो, सख्त बात से नहीं स्नेह से
अपने अंतर का नेह अरे, तुम उसे जरा देकर देखो ।
कितने भी गहरे रहें गर्त, हर जगह प्यार जा सकता है,
कितना भी भ्रष्ट जमाना हो, हर समय प्यार भा सकता है ।
जो गिरे हुए को उठा सके, इससे प्यारा कुछ जतन नहीं,
दे प्यार उठा पाए न जिसे, इतना गहरा कुछ पतन नहीं ॥

(भवानी प्रसाद मिश्र)

(१) उत्तर लिखिए :

१. किसी से काम करवाने के लिए उपयुक्त -
२. हर समय अच्छी लगने वाली बात -

(२) उत्तर लिखिए :

१. अच्छा प्रयत्न यही है -
२. यही अधोगति है -

(३) पद्यांश की तीसरी और चौथी पंक्ति का संदेश लिखिए ।

भाषा बिंदु

कोष्ठक में दिए गए प्रत्येक/कारक चिह्न से अलग-अलग वाक्य बनाइए और उनके कारक लिखिए :

[ने, को, से, का, की, के, में, पर, हे, अरे, के लिए]

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

